

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 2, धन्यवाद की प्रार्थना, कुलुस्सियों 1:1-14

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह सत्र 2 है, कुलुस्सियों अध्याय 1:1-14 में धन्यवाद की प्रार्थना।

बाइबिल अध्ययन व्याख्यान में आपका स्वागत है। हम जेल पत्रों को देख रहे थे, जिसे हमने पहले कवर किया था; हमने जेल पत्रों के परिचय को सामान्य रूप से देखा, और हमने उन विशिष्ट चीजों को भी देखा जो कुलुस्सियों से संबंधित हैं। पिछले व्याख्यान में, हमने कुछ चीजों की जांच की, लेखक का मुद्दा और पत्र का संदर्भ, और मैंने कुछ चीजों को स्पष्ट किया ताकि हम अब परीक्षण में जा सकें और सवाल पूछना शुरू कर सकें, जैसे कि यह पत्र क्यों लिखा गया था? क्या हो रहा है? ऐसी कौन सी चीजें हैं जिन्हें हमें वास्तव में इस बात को अच्छी तरह समझने के लिए जानना चाहिए कि यह पत्र किस बारे में है? तो, हम यहाँ जल्दी से दूसरे व्याख्यान को शुरू करने के लिए आगे बढ़ेंगे, पत्र के उद्देश्य को देखते हुए।

उद्देश्य से, हम सीधे अध्याय एक में क्या हो रहा है, इस पर नज़र डालना शुरू करेंगे। तो, सबसे पहले, आइए कुलुस्सियों के उद्देश्य को देखें। वैसे, उद्देश्य, अंग्रेज़ी शब्द उद्देश्य, उन शब्दों में से एक है जो मुझे अमेरिका, इंग्लैंड, यूरोपीय पक्ष, पूर्वी यूरोप, क्रोएशिया और बोस्निया में कई बार लोगों ने बताया है। यह आश्चर्यजनक है।

वे सभी मुझसे कहते रहे हैं, तुम्हें नहीं पता कि इस शब्द का उच्चारण कैसे किया जाता है। और तुम्हें इसका उच्चारण सही से करना होगा। उद्देश्य, जब मैं उद्देश्य की बात करता हूँ, तो मेरा मतलब उद्देश्य से होता है।

ठीक है, तो कुलुस्सियों का उद्देश्य। दूसरे शब्दों में, पत्र क्यों लिखा गया था? पत्र चर्च में कुछ विशिष्ट मुद्दों को संबोधित करने के लिए लिखा गया था। कल्पना कीजिए जब मैं यहाँ चर्च शब्द का उल्लेख करता हूँ। मुझे यहाँ कुछ स्पष्ट करने दें।

जब मैं यहाँ चर्च शब्द का उल्लेख करता हूँ, तो ऐसे गिरजाघर की कल्पना मत कीजिए जो रविवार को आकर मिलने वाले लोगों से भरा हो, और फिर जब वे रविवार को आकर मिलते हैं, तो उनके पास कुछ अद्भुत भजन होते हैं जैसे कि अमेजिंग ग्रेस, और मेरा एक पसंदीदा, एक चर्च है, जिसे मुझे बनाए रखना है, और एक ईश्वर की महिमा करनी है। और फिर एक उपदेशक खड़ा होता है और अद्भुत उपदेश देता है। इसकी कल्पना मत कीजिए।

कल्पना कीजिए, यहाँ चर्च के संदर्भ में, ईसाई लोग लोगों के घरों में मिलते हैं, औसत आकार के अनुसार, जैसा कि हम जानते हैं कि सबसे बड़े घर में वास्तव में 50 लोग रह सकते हैं। वे आते हैं, वे गा सकते हैं, वे भोजन साझा कर सकते हैं, वे धर्मग्रंथों का अध्ययन कर सकते हैं, और वे एक-दूसरे को प्रोत्साहित कर सकते हैं। ऐसे चर्च की कल्पना करें।

और जैसा कि आप उस चर्च की कल्पना करते हैं, कल्पना करें कि इस चर्च में झूठी शिक्षाओं के कारण कुछ समस्याएँ हैं। कुछ लोग यीशु मसीह के बारे में सुने या जाने गए संदेश को तोड़-मरोड़ कर पेश करने के लिए आते हैं। पौलुस इन मुद्दों को संबोधित करने का प्रयास करने के लिए लिखता है ताकि मसीही अपना ध्यान केंद्रित रखें।

लेकिन जब हम झूठी शिक्षा के बारे में सोचते हैं, तो आप पूछना चाहेंगे कि इस झूठी शिक्षा की प्रकृति क्या है? खैर, कुछ विद्वानों का मानना है कि पाठ को करीब से देखने पर, खास तौर पर कुलुस्सियों के अध्याय 2 को, कोई यह देखना शुरू कर देता है कि यह पत्र यहूदी रहस्यवाद से निपट रहा है, जो कि, जैसा कि मैं आधुनिक भाषा का उपयोग करता हूँ, यहूदी धर्म और बुतपरस्ती के एक साथ मिश्रित रूप का एक संकर है। यदि आप लैटिन अमेरिका में हैं, तो अब कुछ देशों में सैंटेरिया नामक कुछ है, जहाँ ईसाई धर्म और बुतपरस्ती गतिविधि का एक जाल है, उस तरह की रहस्यमय गतिविधि चल रही है, जैसा कि कुछ विद्वान तर्क देते हैं। हालांकि, मुझे कहना चाहिए कि हाल के वर्षों में, इस विषय पर टिप्पणी करने वाले बहुत से लोग उस दृष्टिकोण से दूर जा रहे हैं।

एक पुराना विचार है कि यह पत्र चर्च में कुछ गूढ़ज्ञानवादी प्रभाव या गूढ़ज्ञानवादी गतिविधियों को संबोधित करने के लिए लिखा गया था। अब हम समझ गए हैं कि गूढ़ज्ञानवाद वास्तव में पहली शताब्दी के अंत तक विकसित नहीं हुआ था। इसलिए, हम दूसरी शताब्दी में गूढ़ज्ञानवादी गतिविधियों के उद्भव को देख सकते हैं।

इसलिए, कुलुस्सियों का अध्याय गूढ़ज्ञानवाद या गूढ़ज्ञानवादी धारणाओं को संबोधित नहीं कर सकता है, जिसे हम पिछले विद्वानों में पाठ में चल रही बातों के रूप में चित्रित करते थे। इसलिए, उस स्थिति से विद्वानों में एक बड़ा बदलाव आया है। इसका मतलब यह नहीं है कि उस विचार की कोई वैधता नहीं थी क्योंकि यदि आप गूढ़ज्ञानवादी टोपी पहनते हैं और कुलुस्सियों के अध्याय 2 को देखना शुरू करते हैं, तो आपको कुछ ऐसी विशेषताएं दिखाई दे सकती हैं जो आपको आसानी से उस निष्कर्ष पर पहुंचा सकती हैं।

कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि यह पत्र दार्शनिक प्रभाव या परंपराओं को संबोधित करने के लिए लिखा गया था जो ईसाई सोच में अपना रास्ता बना रहे थे और ईसाई विचार और व्यवहार को आकार दे रहे थे। क्यों? यह शायद पत्र के उद्देश्य पर हमारे पास विद्वानों के बीच सबसे कमजोर विचारों में से एक है। इसका एकमात्र कारण यह है कि मुझे लगता है कि कुलुस्सियों के अध्याय 2 में दर्शन शब्द आता है। और इसका मतलब है कि कुछ दर्शन चल रहा है। यह वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है जिसे आधुनिक विद्वान इतना अधिक मानते हैं।

आज विद्वानों के बीच सबसे अधिक स्वीकार्य और शायद प्रचलित दृष्टिकोण यह है कि कुलुस्सियों को वास्तव में किसी प्रकार के समन्वयवाद का मुकाबला करने के लिए लिखा गया था। यह रहस्यपूर्ण बात लगती है जिसके बारे में हम यहूदी धर्म और बुतपरस्ती के साथ बात कर रहे हैं, लेकिन अब आप इसमें ईसाई धर्म को जोड़ देते हैं, और आपके पास बुतपरस्त प्रभाव, यहूदी प्रभाव और चर्च में चल रही ये सभी चीजें हैं, और ईसाईयों को यह निश्चित नहीं है कि ईसाई धर्म क्या है। वैसे, यह एक ऐसा संदर्भ है जिसमें बुतपरस्त परंपरा हर जगह है।

वहाँ बहुत सारे देवता थे, बहुत सारे थे, और मैं आपको बताना चाहूँगा कि मेरे पास जो कुछ भी है, उससे पता चलता है कि वहाँ बहुत सारी जादुई गतिविधियाँ थीं। लोग जादू कर रहे थे। उन्हें कुछ करने के लिए कुछ शक्ति चाहिए।

शहर में बहुत सारे धार्मिक स्थल थे, और ईसाई किसी तरह इनमें से कुछ प्रभावों के आगे झुक गए। अगर आप सोच रहे हैं कि वे इतने समझदार नहीं थे, तो मैं आपको याद दिला दूँ कि दार्शनिक दुनिया के उस हिस्से को महत्वपूर्ण तरीकों से प्रभावित कर रहे थे। इसलिए, वहाँ बहुत सारी बौद्धिक गतिविधियाँ थीं।

लोग समझदार थे, इसलिए वहाँ दार्शनिक प्रभाव की भी संभावना थी। चर्च में, चर्च में कुछ यहूदियों के बारे में सोचें और चर्च में कुछ गैर-यहूदियों के बारे में सोचें। एक समूह बुतपरस्त पृष्ठभूमि से आता है, और एक समूह पारंपरिक यहूदी पृष्ठभूमि से आता है, और वे इस बहुलवादी संदर्भ में ईसाई जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं।

क्लिंट अर्नोल्ड, मुझे कहना चाहिए, सबसे पहले, शायद मुझे एक अस्वीकरण स्थापित करना चाहिए। क्लिंट अर्नोल्ड अब बायोला विश्वविद्यालय में टैबर्ड स्कूल ऑफ थियोलॉजी के डीन हैं। क्लिंट का तर्क अब सबसे अधिक, शायद सबसे अच्छा स्पष्टीकरण माना जाता है, जो कि पत्र में क्या चल रहा है, इसका वर्णन करता है।

क्लिंट ही वह व्यक्ति है जिसने हमें यह समन्वयवादी दृष्टिकोण सुझाया। और क्लिंट ने यह कहा है, जो दिलचस्प है, आप कई टिप्पणीकारों को इसी वाक्य को उद्धृत करते हुए पा सकते हैं जिसे मैंने आपके लिए स्क्रीन पर रखा है। कोलोसियन दर्शन वास्तव में फ्रीजियन लोक विश्वास, स्थानीय लोक यहूदी धर्म और ईसाई धर्म के संयोजन का प्रतिनिधित्व करता है।

स्थानीय विश्वास में कुछ विशिष्ट फ्रीजियन गुण हैं, लेकिन इसमें बहुत कुछ ऐसा भी है जिसे हम जादू या अनुष्ठान शक्ति के रूप में वर्णित कर सकते हैं। क्षेत्र का यहूदी धर्म पहले से ही इन स्थानीय विश्वासों और प्रथाओं से प्रभावित था। इसके विपरीत, अनातोलियन यहूदी धर्म की जादुई संरचना ने पहले से ही बुतपरस्त विश्वासों और प्रथाओं में अपना योगदान दिया था।

धर्मांतरित यहूदियों और बुतपरस्तों से ईसाई समुदाय की घोषणा के साथ, चर्च के भीतर उभरते फैशन की प्रथाओं और विश्वासों को लेकर कुछ साल बाद चर्च में विवाद खड़ा हो गया। प्रेरित पॉल की दृढ़ राय में, दर्शन ने आसपास के धार्मिक वातावरण के साथ बहुत अधिक समझौता किया। पॉल ने इस समन्वयवादी समझौते को देखा, और मुझे कहना चाहिए, क्लिंट अर्नोल्ड ने पुस्तक में वास्तव में इन शब्दों को लिखा और शीर्षक में समन्वयवाद शब्द के साथ इसका शीर्षक दिया।

पॉल इसे एक खतरनाक समझौता मानता है और इसलिए, इस मुद्दे को संबोधित करने की कोशिश करता है। तो, जहाँ तक उद्देश्य का सवाल है, आइए इसे इस तरह से देखें - चर्च में समस्याएँ।

मैं अमेरिका या दुनिया के किसी और हिस्से के बारे में नहीं सोचता जहाँ हमारे पास यह है। अब, अमेरिकी दर्शकों के लिए, आप न्यूयॉर्क शहर या पेंसिल्वेनिया के कुछ छोटे शहरों के बारे में सोचें, जहाँ मैंने हाल ही में पाया कि वहाँ बहुत सारी सप्ताहांत गतिविधियाँ होती हैं। तो आपके पास सप्ताहांत है, आपके पास कुछ अन्य चीजें हैं, आपके पास कुछ हस्तरेखाएँ हैं, आपके पास है, और कुछ लोग ईश्वर के बारे में कुछ और अनुभव करना चाहते हैं।

इसलिए, वे इन सभी चीजों को अपने ईसाई अनुभव में भी शामिल करना चाहते हैं। जो लोग आ रहे हैं, जो अप्रिकी संदर्भ से इसका अनुसरण कर रहे हैं, आप सभी, शायद लैटिन अमेरिकी संदर्भ, आप जानते हैं कि वास्तव में बहुत से ईसाई अभी भी सभी प्रकार की चीजों के लिए मूर्तिपूजकों से परामर्श करते हैं और फिर भी सोचते हैं कि वे अपने ईसाई जीवन को जारी रख सकते हैं। तो, कल्पना कीजिए कि पॉल विश्वासियों के समुदाय में इन मुद्दों को संबोधित कर रहे हैं जहाँ ये सत्य की वास्तविक सामग्री, अर्थात् सुसमाचार को दूषित करने वाली एक समस्या बन रहे हैं।

लेकिन ये झूठे शिक्षक कौन और कहाँ से आ रहे थे? क्या यह झूठी शिक्षा है कि बाहर से आकर चर्च में कुछ लाने की कोशिश की जा रही है? क्या यह अंदर से है या क्या? खैर, आप इसे तीन उंगलियों पर रख सकते हैं। अगर हम एक विशिष्ट विधर्म के बारे में सोचते हैं, तो कुलुस्सियों में यह स्थापित करना बहुत मुश्किल होगा कि यहाँ एक विशिष्ट विधर्म चल रहा है। और इसलिए, समन्वयवादी प्रवृत्तियों के लिए क्लिंट अर्नोल्ड का तर्क विद्वानों में अधिक खरीदा जाता है।

जहाँ तक लोगों के आने का सवाल है, सबूत अंदरूनी लोगों की ओर ज़्यादा इशारा करते हैं। दूसरे शब्दों में, चर्च में वे लोग जो दर्शन, बुतपरस्ती, लोक धर्मों और उन सभी चीजों में हाथ आजमाने की कोशिश कर रहे हैं, जिनके पास आध्यात्मिक अनुभव का उच्च स्तर है। किसी को यह याद दिलाना चाहिए कि जब हम समन्वयवादी गतिविधि कहते हैं, और हम इसे समझाने की कोशिश करते हैं, तो हम इसे समझाने के लिए सरल भाषा का उपयोग नहीं कर सकते हैं जैसे कि हमारे पास झूठी शिक्षा की प्रकृति के सभी विवरण हैं।

एक बात तो तय है: ईसाईयों को धोखा दिया जा रहा था। उन्हें ऐसी शिक्षाओं का पालन करने के लिए धोखा दिया जा रहा था जो सुसमाचार के अनुकूल नहीं थीं। उनके आस-पास के धार्मिक और दार्शनिक विचार उनकी ईसाई गतिविधियों को प्रभावित कर रहे थे।

पौलुस को इस पर बात करनी थी और उन्हें परमेश्वर के साथ सच्चे दिल से चलने में मदद करनी थी। जब हम देखते हैं कि इन झूठे शिक्षकों को पत्र में कैसे दर्शाया गया है, तो हम और अधिक जागरूक हो जाते हैं कि वे कौन हैं और क्या कर रहे हैं। और यहाँ, मैं व्हीटन कॉलेज में पढ़ाने वाले एक सहकर्मी डगलस मून का हवाला देता हूँ, जिन्होंने कुलुस्सियों पर एक बहुत अच्छी टिप्पणी लिखी है और अध्याय 2 से अपने अवलोकनों को रेखांकित किया है। आप यहाँ देख सकते हैं कि अध्याय 2, श्लोक 8 में, झूठी शिक्षा एक खोखला और भ्रामक दर्शन है।

यह मानवीय परंपरा पर निर्भर करता है। यह इस दुनिया की मौलिक आध्यात्मिक शक्तियों पर निर्भर करता है या उनमें संलग्न होता है, एक विशिष्ट धारणा जिस पर हम बाद में विचार करेंगे। यह मसीह पर निर्भर नहीं करता है।

कुलुस्सियों में यह महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह मसीह से अलग है, इसलिए पौलुस को स्पष्टता से स्थापित करना है कि मसीह ही हर उस चीज़ का केंद्र है जिस पर हमें विश्वास करना चाहिए और मसीहियों के रूप में उसे थामे रखना चाहिए। यह झूठी शिक्षा आहार प्रतिबंधों और यहूदी त्योहारों से परहेज़ करने का आह्वान करती है।

यह किसी न किसी तरह के तपस्वी अनुशासन को बढ़ावा देता है, श्लोक 18 और 23। यह स्वर्गदूतों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दूरदर्शी अनुभव की वकालत करता है।

इसमें कुछ हद तक घमंड भी है। पद 18 में, पॉल लिखते हैं कि वे बिना कारण के ही घमंडी हो जाते हैं। इसका मसीह में कोई आधार नहीं है, और इसका सिर से संबंध स्थिर नहीं है। और ये झूठे शिक्षक सांसारिक नियमों को बढ़ावा देते हैं।

इससे आपको झूठी शिक्षा की जटिलता, चर्च में इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है, और यह लोगों के विचारों और व्यवहार को कैसे आकार दे रहा है, के बारे में एक विचार मिल जाना चाहिए। इसलिए यदि हम उस चर्च के बारे में जानते हैं, जिसके लिए हम कुलुस्सियों नामक पत्र लिखा गया था, तो पद 1 को देखने से पहले हम इस पत्र में कौन से सामान्य विषय देखते हैं? मैं आपके लिए जिन धार्मिक विषयों पर प्रकाश डाल सकता हूँ, उनमें वह शामिल है जिसे हम मसीह भजन या प्रमुख ब्रह्मांडीय क्राइस्टोलॉजी कहते हैं, जिसे हम अध्याय 1, पद 15 से 20 में देखेंगे। हमारे पास वह है जिसे विद्वान रैलियों के युगांतशास्त्र कहते हैं।

इस पत्र के बारे में मुझे जो चीज़ें पसंद हैं, जैसा कि आप जेल पत्रों पर चर्चा में पाएंगे, वह है ईसाई परिपक्वता के लिए ज्ञान, जानने और सीखने पर जोर देना ताकि ईसाई उन लोगों के योग्य जीवन को जान सकें, समझ सकें और जी सकें जो खुद को मसीह के अनुयायी कहते हैं। एक प्रमुख विषय जो वास्तव में विद्वानों में उजागर नहीं किया गया है, लेकिन जो विवादित पॉलीन पत्रों में विद्वानों के लिए मेरे अपने योगदान का एक बड़ा हिस्सा है, इन पत्रों में घरेलू संबंध हैं। तो हम इन प्रमुख विषयों को देखते हैं, लेकिन आप यह भी ध्यान रखना चाहते हैं कि आप कभी-कभी कुलुस्सियों पर पुस्तकों या टिप्पणियों के शीर्षकों में भी क्या पा सकते हैं, जो कि क्राइस्टोलॉजी, उच्च क्राइस्टोलॉजी, मसीह केंद्र, मसीह सर्वोच्च, मसीह निर्माता, और मानव और ईश्वर के साथ सामंजस्य स्थापित करने का साधन है और मसीह को थामे रखने और उससे जुड़े रहने की आवश्यकता है ताकि ईसाई वह जीवन जी सकें जो हमसे अपेक्षित है।

अब, आप अपनी बाइबल ले जाना चाहेंगे। बाइबल उठाए बिना भी बहुत कुछ कहा जा चुका है, इसलिए अपनी बाइबल ले जाइए। आप जो भी अनुवाद चाहें, ले सकते हैं।

अधिमानतः, यदि आपके पास NIV, ESV, NRSV, और इस तरह के कुछ अनुवाद हैं, तो आप मेरे द्वारा पढ़ी जा रही रीडिंग का अनुसरण कर सकते हैं। मैं वास्तव में इस बार ESV से पढ़ रहा हूँ।

आइए पत्र को देखना शुरू करें। आप खुद से कह रहे होंगे कि वाह, तो विद्वानों, मेरा मतलब है, आप यह सब समय बिताने से पहले ही इसे देखना शुरू कर देते हैं, यह इतना सरल है।

हाँ, मैं भी ऐसा ही सोचता था, लेकिन इनमें से कुछ बातों को जानना मददगार होता है ताकि जब आप पत्र को पढ़ें, तो आप समझ सकें कि पत्र का क्या मतलब है और परमेश्वर के वचन से हमें क्या सीखना है। जब हम पत्र के पहले कुछ पदों को पढ़ते और देखते हैं, तो हमें ये पंक्तियाँ मिलती हैं। पौलुस, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित, और तीमुथियुस, कुलुस्से में मसीह में संतों और विश्वासयोग्य भाइयों का हमारा भाई।

परमेश्वर की ओर से आपको अनुग्रह और शांति मिले। मैं यहाँ कुछ बातों को स्पष्ट करने का प्रयास करूँगा। आम तौर पर, हम इनमें से कुछ अभिवादनो को छोड़ देते हैं, जैसे कि वे बहुत आसान हों, इसलिए हमें वास्तव में इस बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि वे हमें क्या संदेश देना या सिखाना चाहते हैं, लेकिन ध्यान दें कि जो व्यक्ति खुद को लेखक के रूप में पहचानता है, वह पॉल है, लेकिन वह यह भी सुनिश्चित करना चाहता है कि जो चर्च उसे नहीं जानता है, वे वास्तव में उसके बारे में और केंद्रीय व्यक्ति के साथ उसके संबंध के बारे में कुछ जानते हैं, जिसके बारे में उन्हें इस पत्र में अधिक जानने की आवश्यकता होगी।

वह एक प्रेरित है। वह मसीह यीशु का एक प्रेरित है। वह कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे, क्षमा करें, यीशु मसीह ने भेजा है।

उसके पास खुद का कोई संदेश नहीं है, और उसका अपना कोई मिशन भी नहीं है। वह अपने भेजने वाले के नाम पर व्यापार करता है। इसलिए अपोस्टोलोस या प्रेरित शब्द का अर्थ हो सकता है वह व्यक्ति जिसे भेजा गया हो या किसी ऐसे व्यक्ति की उपाधि जिसने मसीह को एक नेता के रूप में जाना और उसका अनुसरण किया हो, जैसा कि हम जानते हैं, उदाहरण के लिए प्रेरितों के बारे में, इसलिए पॉल खुद को एक प्रेरित, एक व्यक्ति जिसे भेजा गया हो या एक व्यक्ति के रूप में उपाधि रखने वाला व्यक्ति, एक प्रमुख व्यक्ति जिसने यीशु मसीह का अनुसरण किया हो, उसके काम को देखा हो, उसके साथ समय बिताया हो।

याद रखें, पौलुस दमिश्क जाते समय यीशु के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभव के बारे में बात करता है, लेकिन जिस तरह से पौलुस खुद को पहचानता है, उसमें यह पर्याप्त नहीं है। वह न केवल एक प्रेरित के रूप में मसीह यीशु के साथ अपने रिश्ते को स्थापित करना चाहता है, बल्कि जहाँ तक परमेश्वर के साथ व्यवहार का सवाल है, उसका प्रेरितत्व परमेश्वर की इच्छा से है। वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करने वाले व्यक्ति के रूप में अपनी भूमिका और अपनी स्थिति को वैध बनाता है।

आप इस पत्र को पढ़ते समय इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहेंगे क्योंकि इतनी स्पष्टता के साथ अपने अधिकार को स्थापित करके, वह वास्तव में इन विश्वासियों को दिखा रहा है कि मसीह के साथ उसकी व्यक्तिगत स्थिति अक्षुण्ण है। वह कार्य करता है, कार्य करता है, लिखता है और संदेश भेजता है ताकि वे सभी समझ सकें कि मसीह की इच्छा क्या है, जो एक साझा विश्वास

है, चर्च में झूठी शिक्षा के मुद्दे के बारे में है, और वह कहता है कि मैं इसे तीमुथियुस के साथ लिखता हूँ। तीमुथियुस हमारा भाई है।

तीमुथियुस हमारा भाई है। तीमुथियुस तुम्हारा भाई नहीं है। तीमुथियुस किसी और का भाई नहीं है, लेकिन पौलुस यहाँ काल्पनिक रिश्तेदारी का इस्तेमाल करता है।

हम खुद को ईश्वर के परिवार के रूप में देखते हैं, और खुद को उस परिवार में रखकर, वह पाठकों को बता रहे हैं कि भले ही हम उनसे व्यक्तिगत रूप से नहीं मिले हैं या आप में से कुछ लोग मुझसे व्यक्तिगत रूप से नहीं मिले होंगे, हम सभी भाई-बहन हैं, और मैं चाहता हूँ कि आप यह जान लें कि तीमुथियुस जो मेरे साथ लिख रहा है, वह भी हमारा भाई है, जिसने मसीह यीशु में साझा विश्वास और साझा विश्वास किया है और फिर पॉल चर्च को बधाई देने के लिए आगे बढ़ेगा जो प्राचीन पत्र लेखन में बहुत मानक है। वह उनका अभिवादन करता है, और यह देखना बहुत दिलचस्प है कि वह उनका अभिवादन कैसे करता है या उन्हें कैसे बुलाता है। यह एक ऐसा चर्च है जिसमें कुछ समस्याएँ हैं, है न? यह एक ऐसा चर्च है जिसमें कुछ लोग झूठी शिक्षाओं के आगे झुक रहे हैं, है न? खैर, पॉल उन्हें संत कहते हैं जो पवित्र लोगों के लिए संकट में हैं, जिसका शाब्दिक अनुवाद ग्रीक में है।

वैसे, यहाँ संत होने का मतलब पोप द्वारा संत घोषित किया जाना नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि पोप को किसी को संत बनाना है। पॉल ने इसका इस्तेमाल उन लोगों के लिए किया था जिन्हें एक बार छुड़ाया गया था, जब वे सभी पापी थे जब उन्होंने मसीह यीशु का सामना किया जैसा कि वह अध्याय एक में कहेगा, क्रूस पर उसके काम के खून से कुछ हुआ उनके पापों को क्षमा कर दिया गया था, और इसलिए वे पवित्र लोग बन गए थे वह उन्हें मसीह यीशु में संतों के रूप में संदर्भित कर सकता है।

वह उन्हें भाई भी कहता है, और वह उन्हें वफादार भाई भी कहता है, जो चौकाने वाला है। अब तक, वे मसीह के साथ अपनी स्थिति में और चर्च में कुछ चीजों को आने देने में बेवफाई के संकेत दिखा रहे हैं, लेकिन पॉल भव्य तस्वीर, बड़ी तस्वीर देखता है। ये मसीह यीशु में संत हैं।

वे अभी भी आस्था पर कायम हैं। क्या उनमें कुछ आंतरिक समस्याएँ हैं? हाँ, लेकिन वे संत हैं। वे वफादार हैं, और वह उनसे खुद को दूर नहीं करेगा।

वे भाई-बहन हैं, जैसा कि तीमुथियुस ने पहली पंक्ति में पहले उल्लेख किया था। यह कहना कि वे वफादार हैं, नैतिकता और स्थान दोनों को दर्शाता है या यह कहना कि वे वफादार हैं, इसका मतलब है कि वे परमेश्वर के साथ अपने काम में वफादार हैं या वे जिस तरह से वास्तव में खुद का आचरण करते हैं, उसमें वफादार हैं। यहाँ तक कि परमेश्वर में उनकी वफादारी भी यह दिखाएगी कि जहाँ तक परमेश्वर में उनके स्थान का सवाल है, वे वफादार माने जाते हैं।

नमस्कार। नमस्कार, मेरे प्यारे दोस्तों। संतों को नमस्कार।

भाइयों को नमस्कार और खास तौर पर कुलुस्से में रहने वालों को नमस्कार। पौलुस आगे कहता है कि तुम पर अनुग्रह हो। तुम पर अनुग्रह हो। परमेश्वर की ओर से शांति, और जिस परमेश्वर के बारे में मैं बात कर रहा हूँ वह हमारा पिता है।

आप पर अनुग्रह हो। पॉल के लिए अनुग्रह केवल दान का शब्द नहीं है। पॉल, जो कभी प्रभु यीशु मसीह का उत्पीड़क था, दमिश्क के रास्ते पर उससे मिला, और वहाँ उसने देखा कि परमेश्वर उसके साथ क्या करने का निर्णय लेगा, बजाय इसके कि वह उसके सिर पर थप्पड़ मारे और अगर उसके सिर पर थोड़े भी बाल हों तो उसके बाल पकड़कर उसे उठाए और उसे दण्डित करे और कहे कि हे पॉल, तुमने सोचा था कि तुम मुझे सता सकते हो, है न? परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह दिखाया।

पौलुस के शब्दों में अनुग्रह एक धार्मिक शब्द बन जाएगा। यह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर ने हमारे साथ क्या किया है, जो उसकी दया के लायक नहीं थे। उस भावना में, उस नोट में, वह आपको शुभकामनाएं और अनुग्रह भेजता है।

ईश्वर से शांति। शांति में खुशहाली की भावना होती है। शांति का मतलब शांति कायम करना नहीं है।

शांति उस से जो शांति का राजकुमार है। वह जो अंदर से बाहर तक शांति दे सकता है। आपको शांति मिले और यह शांति हमारे पिता से आती है।

में रिश्तेदारी की भाषा को देखें। तीमुथियुस को हमारा भाई बताया गया है। चर्च के सदस्यों को भाई बताया गया है और परमेश्वर को हमारा पिता बताया गया है।

तो यहाँ इन दो आयतों में भी, पौलुस ने पहले से ही परमेश्वर के परिवार की स्थापना कर दी है, जिसमें वास्तविक पारिवारिक मुद्दे हैं जिन्हें आगामी पृष्ठों में संबोधित किया जाना है। हम परिवार हैं। हमारा पिता परमेश्वर है।

हम भाई-बहन हैं। तो, आइए उन मुद्दों पर विचार करें जो हमें प्राचीन भूमध्यसागरीय ढांचे में परिवार के सम्मान और परिवार की गरिमा के प्रति वफादार लोगों बनने में मदद करेंगे। विद्वानों में से एक, जेम्स डन ने बताया कि जब हम इन अभिवादनों में शांति के बारे में सोचते हैं, तो हम शांति को हल्के में नहीं लेना चाहते हैं।

यह इतना समृद्ध शब्द है कि हमें इनमें से कुछ अभिवादनो को देखते हुए इसकी सराहना करनी चाहिए। उन लिखते हैं कि यहूदी अभिवादन शांति या शालोम की समृद्धि को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह केवल युद्ध की समाप्ति को ही नहीं दर्शाता है बल्कि युद्ध की अनुपस्थिति में खुशहाली और समृद्धि के लिए सब कुछ दर्शाता है और न केवल व्यक्तिगत या आंतरिक शांति बल्कि सामंजस्यपूर्ण संबंधों की संपूर्णता को भी दर्शाता है। पॉल लिखते हैं, हमारे पिता परमेश्वर की ओर से शांति।

अगले पैराग्राफ में, पद 3 से पद 8 तक, पॉल धन्यवाद कहेंगे और प्रार्थना करेंगे, और मैं इसे पढ़ना चाहूँगा। हम हमेशा हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं जब हम आपके लिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि हमने मसीह यीशु में आपके विश्वास और सभी संतों के लिए आपके प्रेम के बारे में सुना है क्योंकि स्वर्ग में आपके लिए आशा रखी गई है, जिसके बारे में आपने सुसमाचार के सत्य के वचन से पहले सुना है जो आपके पास आया है और वास्तव में पूरे संसार में फल दे रहा है और बढ़ रहा है जैसा कि यह आपके बीच भी है जिस दिन से आपने इसे सुना और सच्चाई में ईश्वर के अनुग्रह को समझा, जैसा कि आपने इसे प्रिय साथी सेवक इपफ्रास से सीखा है जो आपकी ओर से मसीह का वफादार सेवक है और जिसने आपको आत्मा में आपके प्रेम को हमें बताया है। आइए अगले कुछ मिनटों में पद 3 से 8 तक के इन कुछ पदों को देखें, और मैं चार खिड़कियाँ पोस्ट करना चाहूँगा जिनका उपयोग हमें इस परीक्षण को देखने के लिए करना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, चार प्रश्न हैं जो हमें इस पर संक्षेप में विचार करने में मदद कर सकते हैं। पहला, किसको धन्यवाद देना चाहिए था? दूसरा, किस समाचार ने धन्यवाद या प्रार्थना को प्रेरित किया? और तीसरा, उन्हें कैसे पता चला या वास्तव में किस बात ने उन विशेष गुणों के विकास को बढ़ावा दिया, जिनका उल्लेख पौलुस ने किया है? और चौथा, इपफ्रास कौन हैं जिनके बारे में पौलुस बात करता है? मुझे ये कुछ पद पसंद हैं, और आज सुबह, वास्तव में, मैं इन पदों को फिर से देखकर और यह देखकर चकित रह गया कि यह अंश कितना समृद्ध है। हम हमेशा आपके लिए ईश्वर का धन्यवाद करते हैं, और मैं यह कहने के लिए रुकूँगा कि यदि आपके पास समय हो, तो देखें कि अकेले अध्याय एक में कितनी बार वेस का सिर दिखाई देता है।

आशा केवल अध्याय एक में ही दिखाई देती है, और यह ऐसी चीज़ है जिसे आप समय निकालकर देख सकते हैं और इस अध्याय का आनंद ले सकते हैं। लेकिन आइए पहले सवाल पर आते हैं कि धन्यवाद किसको दिया जाना चाहिए? अध्याय 3 में, अध्याय 1 की आयत 3 से 8 में धन्यवाद परमेश्वर को दिया जाना चाहिए और किसी और चीज़ को नहीं, यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर को दिया जाना चाहिए। तो, ध्यान दें कि कुछ आयतों में पहले से ही कुछ ऐसा हो चुका है जो पत्र में चार आयतों से भी कम है।

तीमुथियुस हमारा भाई है, संत भाई हैं, परमेश्वर हमारा पिता है, और यह परमेश्वर जो हमारा पिता है, वह हमारे प्रभु यीशु मसीह का भी पिता है। हम यीशु मसीह के भाई-बहन हैं। यह कितनी बड़ी खुशखबरी है। यह परमेश्वर ही है जिसके प्रति धन्यवाद दिया जाना चाहिए क्योंकि वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के जीवन में क्या करेगा।

आइए हम यहाँ एक और महत्वपूर्ण शब्द को न भूलें, प्रभु। हमारे स्वामी, यीशु मसीह, वह हैं जिनके निर्देशों का पालन करते हुए हम खुद को नम्र करते हैं। प्रभु यीशु मसीह, जिनके बारे में हमें बताया जाएगा कि वे हमारे उद्धार का साधन हैं। वे सृष्टि और सभी प्रकार की चीज़ों से पहले से ही मौजूद थे, और मसीहियों के रूप में हमें जो लाभ मिले हैं, वे उनके माध्यम से आए हैं।

हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, जो उसका पिता है। दूसरा प्रश्न, या खिड़की, जैसा कि मैं इसे कहता हूँ। धन्यवाद और प्रार्थना करने के लिए किसने प्रेरित किया? जब हम आपके लिए प्रार्थना करते हैं तो हम हमेशा हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

जब से हमने मसीह यीशु में आपके विश्वास के बारे में सुना है, हमने सभी संतों के लिए आपके प्रेम के बारे में भी सुना है, और यह आपकी आशा के कारण है। इसलिए, जब पौलुस मसीह यीशु में उनके विश्वास, एक दूसरे के लिए उनके प्रेम और उनके पास जो आशा है उसके बारे में सोचता है, तो परमेश्वर को धन्यवाद देने का हर कारण है। लेकिन ऐसा क्यों हो रहा है जब वास्तव में मैंने आपको पहले बताया था कि चर्च में झूठी शिक्षाएँ थीं, लोग ये सभी समन्वयकारी गतिविधियाँ कर रहे थे और फिर भी पौलुस यह सब अद्भुत चित्र बनाने की कोशिश कर रहा है।

नहीं, यहीं पर ईसाइयों को समझने की ज़रूरत है। इसका मतलब यह नहीं है कि चर्च एक आदर्श चर्च था, उनके पास सिर्फ़ बुनियादी बातें सही थीं, लेकिन चर्च में कुछ मुद्दे थे। यह भी संभव है कि पॉल उन्हें कुछ क्षेत्रों के बारे में याद दिला रहा था जिसमें वे अच्छे हैं, ताकि जब वह उन क्षेत्रों पर ध्यान दे जिसमें वे अच्छे नहीं हैं तो यह बहुत ज़्यादा बुरा न लगे।

धन्यवाद और प्रार्थना करने के लिए किसने प्रेरित किया? यह मसीह में उनका विश्वास, संतों के लिए उनका प्रेम और मसीह में उनकी आशा के कारण है। तीसरा प्रश्न और शायद उससे पहले मैं आपको एक मित्र के बारे में याद दिलाना चाहता हूँ जो एक बहुत अच्छी कैथोलिक विद्वान हैं और कनाडा में पढ़ाती हैं मार्गरेट मैकडोनाल्ड जो सोचती हैं कि हमें आशा शब्द को हल्के में नहीं लेना चाहिए। मार्गरेट लिखती हैं कि यहाँ आशा का एक विशेष महत्व है।

यह एक ऐसी मनोवृत्ति से कम है जिसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए, बल्कि एक ऐसी वस्तु है जिसे जब्त किया जाना चाहिए। संक्षेप में यह शब्द शाश्वत जीवन के पर्याय के रूप में कार्य करता है। हमारे पास एक ऐसा स्थान है जो स्पष्ट है।

यह स्पष्ट है कि हम ऐसी किसी चीज़ की आशा नहीं कर रहे हैं जो अस्तित्व में नहीं है। हम ऐसी किसी ठोस चीज़ की आशा कर रहे हैं जिससे हमें अनंत जीवन मिल सके। लेकिन वे इन गुणों तक कैसे पहुँचे? उनके पास वह विश्वास, प्रेम और आशा कैसे आई जिसके बारे में बात की जाती है? यह सुसमाचार, सत्य के वचन के माध्यम से आया।

पद 4 से, जब से हमने मसीह यीशु में तुम्हारे विश्वास और संतों के प्रति प्रेम के बारे में सुना है, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे लिए जो आशा रखी गई है, उसके कारण तुमने सत्य के वचन से पहले ही सुसमाचार सुना है जो तुम्हारे पास आया है, और वास्तव में यह पूरे संसार में फल दे रहा है और बढ़ रहा है। सुसमाचार उन साधनों में से एक है जिसके द्वारा वास्तव में उनके पास इन गुणों को विकसित करने के लिए पहुँच और संसाधन थे। हमें शायद पीछे बैठकर यह कहना पड़े कि शायद यह कहना थोड़ा अतिशयोक्तिपूर्ण है कि सुसमाचार पूरे संसार में है।

हाँ, मैं सहमत हूँ कि पॉल सिर्फ़ यह नहीं कह रहा है कि मैं दुनिया भर में गया; मैं अपने दफ़्तर में दुनिया का भूगोल उठाता हूँ, और फिर मैं यहाँ सुसमाचार के बारे में जो कुछ भी हुआ है, उस पर घेरा लगाता हूँ। नहीं, वह सिर्फ़ यह कहने की कोशिश कर रहा है कि सुसमाचार ज्ञात दुनिया में

फैल गया है, और वह इसी तरह के सुसमाचार के बारे में बात कर रहा है, और यह वह व्यक्ति है जो दुनिया के इतने सारे हिस्सों में संदेश भेजने के लिए ज़िम्मेदार है। उन्होंने यह सब इपफ्रास नामक एक व्यक्ति से सीखा है।

इसलिए, यह ध्यान देने योग्य है कि हमें इपफ्रास नामक इस व्यक्ति के बारे में कुछ जानने की आवश्यकता है। मैंने अक्सर यह प्रश्न पूछा है जिसे मैं यहाँ छोड़ दूँगा। आप किस हद तक उस चर्च के लिए मामला बनाने में विश्वसनीयता को एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं जो झूठी शिक्षा से निपट रहा है? और यदि आप इस बारे में सोचने के लिए रुकना चाहते हैं, तो सोचें कि पत्र कैसे शुरू होता है; सोचें कि पॉल खुद को कैसे स्थापित करता है, इस बारे में सोचें कि उसने उस व्यक्ति का वर्णन कैसे किया जिसकी ओर से वह व्यवसाय करता है, देखें कि वह संत का वर्णन कैसे करता है। देखें कि वह अपने और संतों के बीच किस तरह से संबंध स्थापित करता है, जिस तरह से उसने रिश्तेदारी भाषा का उपयोग किया है, उन विशेषणों को देखें जो उसने उदाहरण के लिए सुसमाचार सत्य को योग्य बनाने के लिए उपयोग किए हैं और देखें कि वास्तविक मुद्दों को संबोधित करने के लिए विश्वसनीयता स्थापित करना कितना महत्वपूर्ण है और फिर वह आपको बता सकता है कि वास्तव में यदि आपके पास सत्य का सुसमाचार है तो आपने इसे सही व्यक्ति इपफ्रास से प्राप्त किया होगा।

इपफ्रास, हमें पद 7 से बताया गया है, आप इसे हमारे प्रिय साथी सेवक इपफ्रास से सीखें। वह आपकी ओर से मसीह में एक वफादार सेवक है और उसने हमें आत्मा में आपके प्रेम के बारे में बताया है। जैसा कि हम इस पत्र में हैं, हम इपफ्रास के बारे में और अधिक जानेंगे।

इपफ्रास वह व्यक्ति था जिसे पौलुस ने तीमुथियुस के साथ कई काम करने के लिए भेजा था। पौलुस लाइकोस घाटी में उसके काम का गवाह भी है। इसी आधार पर पौलुस इपफ्रास और उसकी स्थिति के बारे में मज़बूत दावा कर सकता था।

यहाँ से, वह चर्च के लिए पद 9 से प्रार्थना करेगा और वास्तव में प्रार्थना करेगा। और इसलिए, जैसा कि मैंने ESV से पढ़ा, जिस दिन से हमने सुना है, हम आपके लिए प्रार्थना करना बंद नहीं कर रहे हैं, यह माँगते हुए कि आप सभी आत्मिक ज्ञान और समझ में उनकी इच्छा के ज्ञान से भरे जा सकते हैं ताकि आप प्रभु के योग्य तरीके से चलें, उसे पूरी तरह से प्रसन्न करें, हर अच्छे काम में फल लाएँ और परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते जाएँ। आप उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सभी सामर्थ्य से बलवन्त होते जाएँ, ताकि आप हर प्रकार के धीरज और आनन्द के साथ धीरज रख सकें, और पिता का धन्यवाद करते रहें, जिसने आपको संतों की विरासत में साझा करने के योग्य बनाया है? ज्योति में।

क्यों? क्योंकि पद 13 में उसने हमें अंधकार के क्षेत्र से छुड़ाया है और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानांतरित किया है जिसमें हमें छुटकारा और पापों की क्षमा मिलती है। इस प्रार्थना में, मैं आपके लिए यहाँ कुछ बातों पर प्रकाश डालता हूँ। चर्च के लिए ज्ञान की प्रार्थना पर ध्यान दें जो गुमराह हो रहा है।

पॉल के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रार्थना है कि वे ज्ञान से भर जाएँ। वे जान सकते हैं। मैं अपने कुछ श्रोताओं को यह बताना पसंद करता हूँ, और मुझे यहाँ-वहाँ पेंटेकोस्टल और करिश्माई लोगों से बात करने का अवसर मिलता है।

मैं यह कहना पसंद करता हूँ कि ज्ञानी होना अध्यात्मिक नहीं है क्योंकि जब झूठी शिक्षा चर्च में घुसपैठ कर रही होती है, तो विश्वास के समुदाय को ज्ञान प्रदान करने की आवश्यकता होती है, और विश्वासियों को जो विश्वास होना चाहिए वह एक तर्कपूर्ण विश्वास होना चाहिए, कुछ ऐसा जो बौद्धिक रूप से संसाधित हो, जो सत्य के ठोस ज्ञान पर आधारित हो। पॉल ने चर्च के लिए बिल्कुल सही प्रार्थना की है कि वह ज्ञान से भर जाए, न कि केवल ज्ञान से बल्कि उसकी इच्छा के ज्ञान से। उसने कहा कि वह परमेश्वर की इच्छा से प्रेरित है, और वह प्रार्थना करता है कि वे उसकी इच्छा के ज्ञान से भर जाएँ।

दिलचस्प बात यह है कि वह ज्ञान के लिए प्रार्थना करता है और वास्तव में विशिष्ट क्षेत्रों में प्रभाव डालता है ताकि उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान, अवधारणा को समझने की क्षमता, और वास्तविक जीवन में इसे संसाधित करने और संचारित करने की क्षमता हो। आध्यात्मिक विकास के लिए आध्यात्मिक ज्ञान मायने रखता है, खासकर जब झूठे शिक्षक आपके आस-पास हों, जब आपके आस-पास हर तरह की अधर्मीता हो। हम इन व्याख्यानों को वास्तव में मैसाचुसेट्स में रिकॉर्ड कर रहे हैं, जहाँ हमारे पास संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे कम चर्च भाग है।

जब आप इस तरह के संदर्भ में ईसाई जीवन जीते हैं, तो आप आने वाली हर चीज़ के लिए तैयार रहना चाहते हैं, और इसके लिए, पॉल की प्रार्थना सच होती है। व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान और समझ से भरा होना चाहिए ताकि जो विश्वास जीया जाए वह एक तर्कपूर्ण विश्वास हो। पॉल विशेष रूप से आचरण के क्षेत्र में भी प्रार्थना करता है ताकि वे प्रभु के योग्य बन सकें।

झूठी शिक्षाओं और झूठे शिक्षकों के प्रभाव के बीच, यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि ईसाई ईसाई जीवन जियें। अंधकार की दुनिया में ईसाई निष्ठा मायने रखती है। दुनिया को यह जानना चाहिए कि ईसाई अलग तरीके से काम करते हैं।

वास्तव में, मसीही होना मसीह का अनुयायी होना है। आचरण के लिए प्रार्थना करते हुए, वह प्रार्थना करता है कि वे परमेश्वर को पूरी तरह से प्रसन्न कर सकें क्योंकि सम्मान और शर्म की संस्कृति में, यदि उनका आचरण उस परमेश्वर के अनुरूप नहीं है जिसे वे पिता कहते हैं, तो वे परिवार के लिए शर्मिंदगी का कारण बनते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि वे अच्छा मसीही जीवन जिएँ, ताकि वे फल ला सकें।

मुझे यह इसलिए पसंद है क्योंकि अन्यत्र, हम पाते हैं कि गलातियों में पौलुस ने फल उत्पन्न करने के इसी रूपक का उपयोग यह बताने के लिए किया है कि आत्मा व्यक्तियों के जीवन में क्या कर सकती है। ऐसा नहीं है कि जब आत्मा आपके अंदर काम कर रही होती है, तो आप बस रुक जाते हैं और प्रार्थना में डूब जाते हैं। नहीं, जब आत्मा आपके अंदर काम कर रही होती है, तो जो कुछ होता है उसका एक हिस्सा यह होता है कि आप आत्मा का फल उत्पन्न करने में सक्षम होते हैं, जो नैतिकता है।

झूठे शिक्षकों के प्रभाव के बीच मसीही जीवन महत्वपूर्ण है, और पौलुस विशेष रूप से इसके लिए प्रार्थना करता है। वह यह भी प्रार्थना करता है कि वे बढ़ें, ऐसा नहीं कि उनके पास कोई ज्ञान नहीं है, उनके पास ज्ञान है, लेकिन वे ज्ञान में बढ़ सकते हैं। सीखना।

यह तथ्य कि आप इस बाइबिल अध्ययन श्रृंखला में सीखना चुन रहे हैं, वास्तव में मसीह के बारे में आपके ज्ञान को बढ़ाने का एक तरीका है। यह एक अच्छी बात है। पॉल आध्यात्मिक शक्ति के लिए भी प्रार्थना करता है।

वह प्रार्थना करता है, जिसे हम ईश्वरीय निष्क्रिय कहते हैं, ताकि वे मजबूत हो सकें। वे मजबूत हो सकते हैं, और परमेश्वर उन्हें वह क्षमता प्रदान करेगा जिससे उन्हें वह शक्ति प्राप्त हो जिसकी उन्हें आवश्यकता है। और यह शक्ति इसलिए आवश्यक है कि वे चर्च में एक-दूसरे से लड़ सकें, बल्कि इसलिए कि वे उन चुनौतियों को सहन कर सकें जिनका वे सामना कर रहे हैं, वे सभी चुनौतियाँ जो बाद में आएंगी, ताकि वे धैर्य रखना सीखें, यदि वे चीजें जो उन्होंने परमेश्वर में विश्वास की हैं, विलंबित होती हैं या ठीक उसी समय नहीं आती हैं जब वे एक विशिष्ट परिणाम देखने की अपेक्षा करते हैं।

वह आध्यात्मिक शक्ति के लिए प्रार्थना करता है। और फिर वह उनके आचरण के लिए प्रार्थना करता है। वह प्रार्थना करता है कि, वास्तव में, चर्च में क्रोधी लोग न हों, बल्कि वे कृतज्ञता के आनंद से भर जाएं।

पद 11: उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ, और आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और धीरज रखो, और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें योग्य बनाया कि हम पवित्र लोगों की मीरास में समभागी हों।

धन्यवाद दें। धन्यवाद दें। श्लोक 12: अपनी सम्पत्ति के लिए धन्यवाद दें।

संतों की विरासत में भाग लेने के लिए संपत्ति और योग्यता। संतों की विरासत का खुलासा होने वाला नहीं है। कुलुस्सियों में संतों के लिए विरासत वास्तविक है।

यह वहाँ है। आप इसका हिस्सा हैं। आप ईश्वर की संतान हैं, जिसके पास ईश्वर में विरासत है।

उस संपत्ति और भागीदारी के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें। परमेश्वर ने जो उद्धार दिया है उसके लिए उसे धन्यवाद दें। श्लोक 13, मैं श्लोक 13 के अंत की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा।

आपके पास जो भी अनुवाद है, आप देखेंगे कि जब उन्होंने संतों की विरासत के बारे में बात की, तो उन्होंने कहा कि उन्होंने आपको संतों की विरासत में हिस्सा लेने के योग्य बनाया है। वहाँ दो शब्द हैं जो लगभग महत्वहीन लगते हैं, लेकिन वे वास्तव में महत्वपूर्ण हैं। उसने ये सभी काम प्रकाश में या प्रकाश में किए हैं ताकि वह श्लोक 13 में अंतर कर सके।

उसने तुम्हें छुड़ाया है, या उसने हमें अंधकार के क्षेत्र से छुड़ाया है, प्रकाश और प्रकाश में लाभों के बीच अंतर करते हुए। उसने हमें अंधकार से निकाला, और वचन यह है कि उसने हमें

अंधकार से छुड़ाया, और उसने हमें अपने प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानांतरित कर दिया। वह दुनिया जो अंधकारमय शक्तियों की गतिविधियों से भरी हुई है, जैसा कि हम इस पत्र में बाद में देखेंगे, वह दुनिया है जहाँ से हमें निकाला जाता है, मसीह में बचाया जाता है, और उसके प्रिय पुत्र के राज्य में लाया जाता है।

आइए हम परमेश्वर को धन्यवाद दें। परमेश्वर ने जो कुछ किया है, उसके लिए हम कृतज्ञता से भर जाएँ। इसी भावना से पौलुस स्तुति की भावना से सबसे अच्छा होगा और फिर वह देगा जिसे हम मसीह भजन कहेंगे।

आप जानते हैं, मुझे नहीं पता कि आपने अपने काम और ईश्वर के साथ अपनी स्थिति के बारे में क्या सोचा है। लेकिन मैं यहाँ रुककर यह बताना चाहता हूँ कि यह आज हमारे वास्तविक जीवन में कैसे मूर्त रूप से संबंधित हो सकता है। ईश्वर के साथ अपने काम में हम सभी को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

मसीहियों के तौर पर, हम याद दिलाना चाहते हैं कि उन चुनौतियों का सामना करना हमें मसीहियों से कम नहीं बनाता। अन्यथा, पौलुस धीरज के लिए प्रार्थना भी नहीं करता। हम पौलुस की हमारे लिए की गई प्रार्थना के बारे में जानना चाहते हैं, और शायद यह हमारी प्रार्थना का एक हिस्सा हो सकता है कि हम मजबूत हो सकें।

हम ज्ञान से भरे हो सकते हैं। हम सही जगह पर हो सकते हैं और हमारे आस-पास की सभी चुनौतियों के बावजूद वास्तव में वही होने के लिए धन्यवाद से भरे हो सकते हैं जो परमेश्वर चाहता है कि हम बनें। यह एक ऐसा पत्र है जो झूठी शिक्षा के प्रभाव को संबोधित करने जा रहा है।

लेकिन देखिए यह कितना सुंदर अनुस्मारक है, मसीह ने जो किया है उसका एक सुंदर अनुस्मारक। मुझे वे शब्द पसंद हैं जो उसने हमें हस्तांतरित किए हैं। उसने हमें हस्तांतरित किया है।

क्या आपको कभी कोई खराब नौकरी मिली है? क्या आपने कभी अपने बॉस से नफरत की है? क्या आपने कभी सोचा है कि यह इतना भयानक है? बस कल्पना करें कि उस जगह से आपको अपने सपनों की नौकरी के लिए सबसे अच्छी जगह पर स्थानांतरित कर दिया जाए। उसने हमें कुलुस्सियों में अंधकार से निकाला, और उसने हमें अपने प्यारे बेटे के राज्य में लाया। आइए हम कृतज्ञता से भर जाएँ।

आइए हम चीजों को परिप्रेक्ष्य में रखें। परमेश्वर ने अपना मार्ग नहीं छोड़ा है, और इसलिए चर्च खुद को सभी प्रकार के भ्रम और विभाजन और झूठ के बीच पाता है, और कोई कहता है कि मैं यह अधिक जानता हूँ या मैंने कुछ नई शिक्षा सुनी है। ऐसा करना सबसे अच्छी बात है।

हमें याद दिलाना चाहिए कि हमारे पास विरासत है, और जैसा कि मैंने पहले कहा, इस पत्र को पढ़ें और आशा शब्द को रेखांकित करना शुरू करें और मसीह में आपके पास जो कुछ है उसकी सराहना करें। कुलुस्सियों के अध्याय एक में सीखने शब्द को रेखांकित करें। मुझे लगता है कि आपने लगभग चार बार इस शब्द का इस्तेमाल देखा होगा और सीखने की आवश्यकता

को समझा होगा, और मैं आशा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि जैसे ही आप इस पत्र को पढ़ना शुरू करेंगे, आप कृतज्ञता के साथ रुक सकते हैं।

आप उस शक्ति से भरे हो सकते हैं जो न केवल मस्तिष्क के व्यायाम के लिए एक विद्वान बनने के लिए आवश्यक है, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए भी जो सीखी गई बातों को ईश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन आचरण में स्थानांतरित करने में सक्षम है। जब हम वापस आएं, तो मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करूँगा कि कैसे पॉल ने इस रूपरेखा को स्थापित किया और फिर मसीह की प्रशंसा में फूट पड़ा, जो जिम्मेदार है, जिसे ईश्वर ने यह सब करने के लिए बीच में लाया। विद्वान वास्तव में उस विशेष पेरिकोप या पैराग्राफ को मसीह भजन के रूप में संदर्भित करते हैं।

जब हम वापस आएं तो हम इस पर विचार करेंगे। मुझे उम्मीद है कि आप इस बाइबिल अध्ययन श्रृंखला में हमारे साथ कुछ सीख रहे होंगे। धन्यवाद।

यह सत्र संख्या दो है, कुलुस्सियों अध्याय 1, पद 1 से 14 में धन्यवाद की प्रार्थना।